ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इन्द्रो विश्वस्य राजति। सामवेद 456

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सारे विश्व का शासक और संचालक है।
The Bounteous Lord is the monarch and the motivation of the whole world.

वर्ष 37, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 दिसम्बर, 2013 से रविवार 22 दिसम्बर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

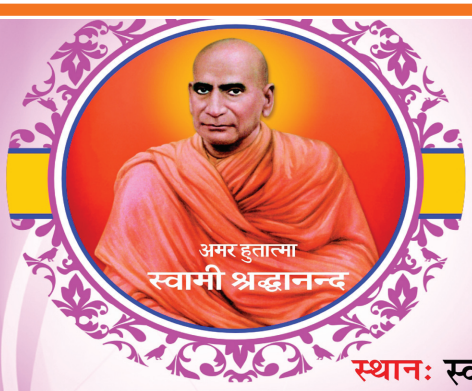

87वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

बुधवार 25 दिसम्बर, 2013

यज्ञः प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थानः स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

विशाल शोभा यात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

स्थानः रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2 समय : दोपहर 1 से 4 बजे

सम्मान : श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार

समारोह एवं पं० ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार के अन्तर्गत

मुम्बई एवं हैदराबाद पुस्तक मेलों में हुआ वेद एवं वैदिक साहित्य प्रचार

नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा 2013-14 के अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर लगने वाले पुस्तक मेलों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने पूर्व की भाँति 'वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार स्टाल' लगाया। इसके अन्तर्गत मुम्बई पुस्तक मेला 29 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013 तथा हैदराबाद पुस्तक मेले 7 से 15 दिसम्बर, 2013 के लिए स्टाल बुक कराए गए जिसके माध्यम से सैंकड़ों लोगों तक आर्ष साहित्य का प्रचार-प्रसार हुआ। मेले में हर बार की तरह इस बार भी 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रति लोगों में विशेषकर युवाओं में रुचि दिखाई दी। आर्यसमाज सान्ताक्रुज एवं आर्यसमाज हैदराबाद के पदाधिकारी, सदस्य, आर्य महानुभाव बड़ी संख्या में आर्य कार्य कर्ताओं के उत्साहवर्धन के लिए पहुँचे। मुम्बई पुस्तक मेले में दिल्ली सभा के अधिकारी श्री एस. पी. सिंह जी ने पहुंचकर साहित्य प्रचार में सहयोग प्रदान किया। स्टाल की व्यवस्था मुख्य रूप से श्री रवि प्रकाश ने सम्भाली। हैदराबाद पुस्तक मेले में डॉ.धर्मतेजा जी एवं सभा अधिकरियों का सहयोग प्राप्त हुआ। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सहयोगी अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए कहा कि सार्वजनिक मेले प्रचार के ऐसे केन्द्र होते हैं जहां जन-सामान्य व्यक्ति आता है हमें ऐसे स्थानों पर पहुंचकर वेद, वैदिक संस्कृति, आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के सन्देश को पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

मुम्बई मेला

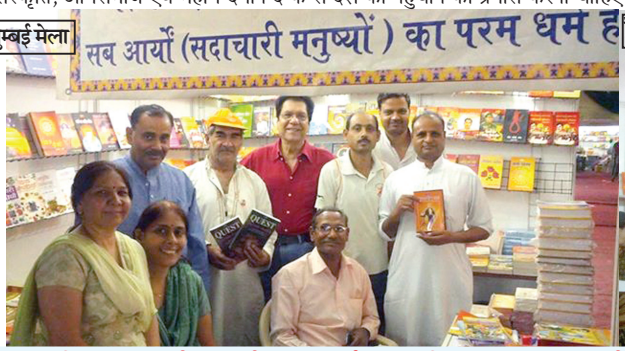

हैदराबाद मेला

फरवरी, 2014 में आयोजित नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में भी होगा व्यापक वेद एवं वैदिक साहित्य प्रचार
हिन्दी-संस्कृत साहित्य के लिए छह एवं अंग्रेजी साहित्य के लिए भी एक स्टाल आरक्षित कराया गया

वेद-स्वाध्याय

सूर्योदय होने पर यज्ञ करें

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्यो३वस्ते मातरिश्व:। तावद्दधात्युप यज्ञमायन्ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्।। ऋग्वेद 10/88/19

अर्थ—**(मातरिश्वन्)** वायुवत् गमनागमन करने वाले जीवात्मन् **(यावत् मात्रम्)** जितने काल तक **(उषस: प्रतीकम्)** उषा देवी का दर्शन होवे और **(सुपर्ण्य: वसते)** उड़ने वाले पक्षी उसके मुख को आच्छादित करने लगे **(तावत्)** तब तक **(अवर: ब्राह्मण:)** ब्राह्मणों का एक वर्ग **(निषीदन्)** बैठकर **(यज्ञम् आयन्)** यज्ञवेदि के समीपस्थ हो **(उप दधाति)** वैश्वानर सूक्त का पाठ या ईश्वर-स्तुति करता है।

इस मन्त्र का अभिप्राय जानने के लिये इसी सूक्त के सतरहवें मन्त्र को जानना आवश्यक है जहाँ आलंकारिक रूप में अग्नि और वायु का संवाद दिया है—

यत्रा वदेत अवर: परश्च यज्ञन्यो: कतरो नौ वि वेद। आ शेकुरित्स धमादं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्।। ऋ० १०.८८.१७

यत्र जिस समय **(अवर:)** पृथ्वी में स्थित अग्नि और **(पर:)** आकाशस्थ वायु **(वदेते)** आपस में विवाद करते हैं **(नौ)** हम दोनों में **(कतरो यज्ञन्य:)** यज्ञ में मुख्य कौन है जो **(वि वेद)** यज्ञ के तत्त्वों, रहस्यों को विशेष रूप से जानता है। **(सख्याय सधमादं आ शेकु:)** जहाँ ऋत्विक् मित्रवत् यज्ञ कर सकते हैं और **(यज्ञं नक्षन्त)** कौन यज्ञ को पूर्ण विधि-विधान से करने में समर्थ हैं यह **(क इदं वि वोचत्)** कौन निर्णय करेगा?

यज्ञ में जो घृत, सामग्री की आहुतियाँ दी जाती हैं अग्नि उन्हें सूक्ष्म कर आकाश में फैला देता है और वायु उस सुगन्धित द्रव्य को देशान्तर में ले जाता है। यही कारण है कि यज्ञ से दूर-देशस्थ प्राणियों को भी लाभ मिलता है। इन दोनों में मुख्य कौन है, इसका निर्णय उन्नीसवें मन्त्र में दिया है। संक्षेप में कहें तो अग्नि की प्रधानता है। वायु में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह पदार्थ को सूक्ष्म कर उसकी शक्ति को कई गुणा बढ़ा सके। अग्नि द्वारा ही आहुति आदित्य [सूर्य तत्त्व] को प्राप्त होती है जिससे वर्षा होती है। वर्षा से अन्न और अन्न से प्रजा की वृद्धि होती है इसलिये यज्ञ में अग्नि की प्रधानता है यह सिद्ध हुआ। वायु उसका सहयोगी है। यहाँ अग्नि से अभिप्राय 'सूर्य' जानना चाहिये।

हे **मातरिश्व:** वायो! जब तक उषा देवी का आगमन न होवे और इस उषा देवी के मुख को आच्छादन करने के लिये पक्षी आकाश में उड़ने न लगें, तब तक एक अवर होता छोटा ऋत्विक् (ब्राह्मण:) वेदवित् (निषीदन्) यज्ञ-स्थल के निकट बैठ कर (उप दधाति) यज्ञ की साज-सज्जा, सामग्री का संकलन और वैश्वानर सूक्त का पाठ करता है। इस सूक्त के देवा सूर्य और वैश्वानर हैं। परमात्मा का नाम भी वैश्वानर है। इसीलिये यज्ञ से पहले ईश्वर, स्तुति, प्रार्थना, उपासना के मन्त्रों का विधान 'संस्कार-विधि' में स्वामी दयानन्द जी ने किया है।

प्रात:काल यज्ञ उषा के आगमन पर करना चाहिये यह इस मन्त्र से प्रमाणित हुआ। उषा सूर्योदय से १०-१५ मिनट पहले आती है यह पहले कहा जा चुका है। इसीलिये शास्त्रों में सूर्योदय होते समय अथवा सूर्योदय होने के पश्चात् यज्ञ करने का विधान किया है—

उदिते जुहुयात्। अनुदिते जुहुयात्। अध्युषिते जुहुयात्।

तैत्तिरीय ब्रा० २.१.९

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में कहा है—'दूसरा अग्निहोत्र कर्म-दोनों सन्धिवेला अर्थात् सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र करने का समय है।' इससे पहले सन्ध्योपासना करने का विधान किया है। सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त से पूर्व यज्ञ क्यों किया जाये इसके लिये निम्न कारण हैं—

१. ब्राह्ममुहूर्त्त में सन्ध्योपासना करने का समय है। यह मुहूर्त्त सूर्योदय तक रहता है। इसी भाँति सूर्यास्त के पश्चात् जब आकाश में तारे दीखने लगें तब तक सन्ध्योपासना करनी चाहिये। इसे ब्रह्म यज्ञ कहते हैं। इस समय देवयज्ञ करने से सन्ध्योपासना में व्यवधान होगा क्योंकि ब्रह्मयज्ञ भी आवश्यक है।

२. प्रात:काल के मन्त्रों में **सूर्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा** बोलकर आहुति दी जाती है। तब सूर्योदय हुआ ही नहीं है तब ऐसा मन्त्र बोलना निष्प्रयोजन ही माना जायेगा। मन्त्रों के उच्चारण करने का यही प्रयोजन है कि जैसा कर्म किया जाये वैसा ही मुख से बोले और उसका अर्थविचार कर जीवन में धारण करे। सायंकालीन मन्त्रों में **अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा** से जो आहुति दी जाती है वह इसलिये कि सूर्यास्त के पश्चात् भी उसकी ज्योति आकाशस्थ बनी रहती है और उसकी ऊर्जा रात्रि में भी पृथिवी को कुछ उष्णता प्रदान करती रहती है।

३. सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र करने का यह भी लाभ है कि कीट-पतंगे वर्षा ऋतु में प्राय: यज्ञाग्नि में जल कर मर न जायें। इनका आकर्षण अन्धकार में अग्नि को देखकर ही होता है। सूर्य के प्रकाश में वे आते ही नहीं।

४. सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि सूर्य की किरणों में ही वृक्ष वायु में से कार्बन डाय आक्साइड का ग्रहण कर उसे अपना भोजन बना लेते हैं और आक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं। इसीलिये यज्ञशाला के चारों ओर वृक्षावलि, गुल्म, लता आदि से आच्छादित करने का विधान या परिपाटी देखी जाती है। यज्ञ में वट, गूलर, पीपल, आम आदि की समिधाओं का भी यही प्रयोजन है कि उनमें कार्बन की मात्रा कम होती है। यज्ञशाला से उत्थित सुगन्धित वायु से पौधे कार्बन डाय आक्साइड का आचूषण कर उसे और भी शुद्ध-पवित्र बना देते हैं। ऐसा वायु दूर देशस्थ लोगों को भी आरोग्य प्रदान करता है।

५. भोपाल गैस काण्ड के पश्चात् यज्ञ पर प्रयोग किये गये और यह पाया गया कि सूर्योदय होते समय जो यज्ञ किया जाता है उसमें पर्यावरण को शुद्ध करने की क्षमता अधिक होती है। इस विषय में और अधिक अनुसन्धान करने की आवश्यकता है।

- क्रमश:

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज रानी बाग मेन रोड द्वारा एकत्र राशि

893	श्रीमती सुनीता भाटिया	200
894	श्रीमती उर्मिला भाटिया	200
895	गायत्री परिवार	5000
896	श्रीमती उषा सचदेवा	100
897	श्रीमती उषा गिरधर	500
898	श्रीमती अतिराज वधवा	500
899	श्रीमती आशा कूपर	2500
900	श्रीमती तुलसी बाई	200
901	सर्वश्री रामगोपाल लीखा	1100
902	प्रेमप्रकाश आर्य	1100
903	श्रीमती विमला शर्मा	2100
904	श्रीमती सुमन खुराना	1000
905	श्रीमती गीता	500
906	राकेश ठाकुर	50
907	श्रीमती अंजना चावला	2100
908	श्रीमती श्रेष्ठा जी	500
909	श्रीमती सन्तोष गुप्ता जी	251

-क्रमश:

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। - *महामन्त्री*

भूल सुधार : आर्य सन्देश के गत अंक 9 से 15 दिसम्बर,2013 में पृष्ठ 5 पर प्रकाशित आयोजनों की सूचना में भूलवश वर्ष 2014 की तिथियां प्रकाशित हो गई हैं। कृपया इन्हें सुधारकर 25 नवम्बर से 22 दिसम्बर, 2013 एवं 18 से 22 दिसम्बर, 2013 पढ़ा जाए। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

— विनय आर्य, महामन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
23 दिसम्बर पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द - एक महान व्यक्तित्व

स्वामी श्रद्धानन्द जी भारत के यशस्वी नेताओं में से एक थे। उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कर-कमलों से गढ़ा व राष्ट्र-सेवा हेतु प्रेरित किया। स्वामी श्रद्धानन्द आयु-भर राष्ट्र-सेवा, समाज-सुधार दलितोद्धार, वेद-प्रचार, पतिता-उद्धार, शुद्धिकरण, महिला-मंडन सरीखे पुनीत कार्यों में जुटे रहे। न थके, न रुके, बस आगे ही आगे बढ़ते गए।

स्वामी श्रद्धानन्द एक चमत्कारिक व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन द्वारा किए गए अनेक कार्यों को देख-सुनकर प्रत्येक व्यक्ति का आचंभित होना स्वाभाविक है। उनके कुछ एक अनोखे कार्यों का लघु-विवरण इस प्रकार है:-

बदल गई जीवन की राह

सन् 1879 के आस-पास की बात है। अपने पिताश्री के बहुत कहने-सुनने पर वे अनमने मन से बरेली में चल रही महर्षि की एक सभा में जा पहुँचे। इससे पूर्व वे सभी साधु-संन्यासियों को समाज पर भार ही मानते थे। उन्हें कूप-मंडूक माना करते थे।

महर्षि की तर्क-संगत व युक्तियुक्त बाते सीधे उनके मन में घर करती गई। वे अनायास महर्षि की ओर खिंचते चले गए। वे पक्के अनीश्वरवादी थे, महर्षि के सौजन्य से वे प्रथम श्रेणी के आस्तिक बन गए। उस समय उनका नाम था मुन्शी राम।

महा-नास्तिक बन गया परम-आस्तिक

युवा मुन्शीराम को महर्षि से अनेक बार वार्ता आदि करने के सुअवसर मिलते रहे। महर्षि-प्रदत्त शंका समाधानों ने उनके समस्त संशय, भ्रम आदि समूल नष्ट कर डाले थे। उन्होंने महर्षि को अपना पथ-प्रदर्शक एवं गुरु मान लिया था।

एक बार, उन्होंने महर्षि से पूछा, "आपने मुझे प्रभु-दर्शन तो कराए ही नहीं।"

"मैंने तुम्हें प्रभु-दर्शन कराने संबंधी वचन बोला ही कब था?" ऋषिवर ने उत्तर दिया था। तत्पश्चात् उन्होंने यह मंत्र कह सुनाया- **"नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यों, न मेद्यया न बहुना श्रुतेन"** अर्थात् 'प्रभु की प्राप्ति ईश-संबंधी प्रवचनों के सुनने अथवा तीव्र बुद्धि से या अत्याधिक श्रुतिवान बनने से नहीं हो पाती। जिस किसी पर अपनी कृपा करके प्रभु (उसे) अपना भक्त चुन लेते हैं, उसे ही प्रभु का सही रूप समझ में आ पाता है।

इसी महामंत्र ने मुंशीराम को सदा हेतु आस्तिक बना दिया था।

'सत्यार्थ प्रकाश' से मिला महा-प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद मुन्शीराम जी का जीवन ही बदल गया। यह सन् 1890 की बात है। उनके मन में आर्य समाज के प्रति समर्पण की भावना जाग उठी। शीघ्र ही वे लाहौर आर्य-समाज के अग्रणी नेता माने जाने लगे। धीरे-धीरे वे पूरे राष्ट्र के आर्य नेता बन गए।

मानव-निर्मात्री शिक्षा प्रणाली का उपयोग

मुन्शीराम जी प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धत्ति के परिपोषक थे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली द्वारा ही मानव-मात्र का बहुमुखी विकास संभव है। इसी लिए उन्होंने गुरुकुल, कांगड़ी की स्थापना की थी। यहाँ पर वैदिक शिक्षा के साथ रसायन-विज्ञान, भौतिकी, प्राणी-विज्ञान आदि जैसे विषय भी पढ़ाए जाते थे। आज यह गुरुकुल एक अग्रणी विश्व विद्यालय के रूप में विश्वभर की ख्याति अर्जित कर रहा है।

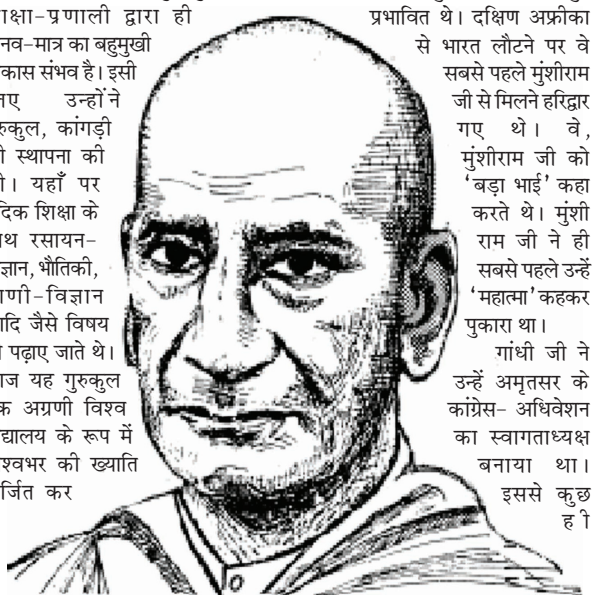

समय पूर्व अमृतसर का जलियांवाला बाग

राष्ट्र-प्रेम का अनुकरणीय उदाहरण

गांधी जी मुंशीराम जी से बहुत प्रभावित थे। दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर वे सबसे पहले मुंशीराम जी से मिलने हरिद्वार गए थे। वे, मुंशीराम जी को 'बड़ा भाई' कहा करते थे। मुंशी राम जी ने ही सबसे पहले उन्हें 'महात्मा' कहकर पुकारा था।

गांधी जी ने उन्हें अमृतसर के कांग्रेस- अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया था। इससे कुछ ही काण्ड घटित हुआ था। वहां के लोग सहमे-सहमे से थे। वहाँ पर कांग्रेस का अधिवेशन करवाना एक असंभव-सी बात व टेढ़ी खीर जैसा ही था। पर महर्षि के उस अनन्य भक्त ने असंभव को संभव कर दिखाया। इस सफलता के पीछे थी उनकी राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना। उन्होंने असहयोग आंदोलन में एक अग्रणी नेता के रूप में कार्य किया। देश-प्रेम की भावना उनकी रग-रग में समायी थी। इसीलिए अंग्रेज शासक उन्हें शक की निगाहों से देखा करते थे। एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने उनसे पूछा था, "आप अपने गुरुकुल में बम भी बनाते है?" "हाँ, बनाता हूँ। मेरा प्रत्येक छात्र एक बम ही तो है, उनका सपाट उत्तर था।"

राष्ट्र-भाषा से अनन्य प्रेम

स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने श्रद्धेय गुरु से स्वराज्य, स्वदेश, स्वभाषा आदि के उच्च आदर्श मानो बपौति में प्राप्त हुए थे। इसीलिए वे हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक बन कर सामने आए। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर पर्याप्त ख्याति पाई थी।

अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपना भाषण हिन्दी में दिया। कांग्रेस पार्टी के मंच से इससे पूर्व सभी भाषण इंगलिश में ही दिए जाते थे। स्वामी जी ने वर्षों से चली आ रही परंपरा को एक किनारे रख कर अपनी राष्ट्र-भाषा का मान बढ़ाया।

उन द्वारा स्थापित 'गुरुकुल कांगड़ी' में विज्ञान आदि विषयों सहित सभी विषय हिन्दी में ही पढ़ाए जाते थे। उस काल में विज्ञान आदि विषयों की स्नातक स्तर की पुस्तकें हिन्दी में तैयार करवाना कितना दुष्कर कार्य रहा होगा।

महान व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धाभाव

रेम्जे मेकनाल्ड इंग्लैड के प्रधानमंत्री थे। सन् 1924 में उन्होंने लिखा था, "यदि कोई ईसा मसीह की मूर्ति बनाना चाहे तो वह स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने सम्मुख बिठा ले तथा उनकी ही प्रतिमूर्ति बना ले।" गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने एक पत्र में लिखा था, "आप अपने गुरुकुल के छात्रों को स्वतंत्रता-प्राप्ति के उच्च संस्कारों से सुशोभित कर रहे हैं। भारत लौटने पर मैं आपके चरणों में अपना शीश झुकाना चाहूंगा।"

स्वामी जी को एक मतान्ध मुस्लिम ने मार डाला था। तब गांधीजी ने कहा था, "वे (स्वामी श्रद्धांनद) एक वीर योद्धा थे। वीर कभी चारपाई पर पड़ा-पड़ा नही मरता। वह युद्धक्षेत्र में ही वीरगति पाता है। उनकी वीरता से मुझे ईर्ष्या हो रही है।" डा. अम्बेडकर के अनुसार वे दलितों के सर्वोच्च नेता थे। अनेक महापुरुषों ने उनके गुणों व कार्यों की जी खोलकर प्रशंसा की है। हमें अत्यंत गर्व है कि हम सब उस संस्था से जुड़े है, जिसका नेतृत्व उस महाबली के हाथों में रहा। उन्हें हमारी ओर से शत-शत प्रणाम।

- सुखदेव मल्होत्रा, 634-बी, श्रीनगर, शकूरबस्ती, दिल्ली-34

प्रतिक्रिया

पुण्य भूमि-गुरुकुल काँगड़ी-कुछ तथ्य

सम्पादक महोदय,

जब कभी गुरुकुल काँगड़ी से सम्बन्धित कोई लेख अथवा समाचार छपता है तो उसे पढ़ने की उत्सुकता बढ़ जाती है। साप्ताहिक आर्य संदेश के वर्ष 37, अंक 3, 25 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2013 के अंक में श्री हर्षप्रिय आर्य का लेख पुण्य भूमि गुरुकुल काँगड़ी पढ़कर प्रसन्नता हुई। लेख की भाषा, शैली तथा प्राकृतिक चित्रण बहुत अच्छा लगा। श्री हर्ष प्रिय जी ने मेरी स्मृतियों को भी ताजा कर दिया। मैं सन् 1945 से 1955 तक वर्तमान गुरुकुल काँगड़ी में ही रहा हूँ क्योंकि मेरे पिता स्व. श्री वागीश्वर विद्यालंकार वहीं पढ़े और सन् 1919 में स्नातक बनने के बाद वहीं हिन्दी, संस्कृत पढ़ाकर सन् 1959 में सेवानिवृत होकर सीता राम बाजार दिल्ली आ गये। लेख अच्छा तथा प्रेरणादायक है लेकिन कुछ स्थानों पर तथ्यों पर आधारित नहीं है। आलोचना की दृष्टि ने नहीं बल्कि पाठकों को वास्तविकता का ज्ञान कराने की दृष्टि से कुछ तथ्य लिख रहा हूँ।

1. लेख को पढ़ने से पता लगता है कि वर्तमान गुरुकुल 'पुण्य भूमि गुरुकुल काँगड़ी है'। वास्तविकता यह है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल की स्थापना गंगा नदी के पार दूसरे किनारे पर काँगड़ी गाँव में सन् 1902 में की थी। गुरुकुल से सम्बन्धित पुराने लोग उसे ही पुण्य भूमि कहते हैं। मुझे याद है कि बसन्त पंचमी पर वर्तमान गुरुकुल के सभी छात्र तथा सभी निवासी एक दिन के लिए वहाँ जाते थे। वहाँ खेल कूद प्रतियोगिताएँ होती थी तथा सहभोज के बाद सभी गुरुकुल हरिद्वार लौट आते थे।

2. लेख में लिखा है कि ठाकुर अमन सिंह जी ने यह भूमि गुरुकुल के लिये दान दी थी। वास्तविकता यह है कि उस दानवीर के नाम से पहले 'ठाकुर' नहीं बल्कि 'मुंशी' लिखा जाता था। वे वैश्य परिवार के थे, ठाकुर परिवार के नहीं। वे मेरे पिता जी के मौसा तथा मेरे दादा थे। जिस पलंग पर वे सोते थे, मेरे पिता जी ने उसे वर्षों तक संभालकर रखा अब वह नहीं रहा उसका मुझे दुख है।

3. सन् 1924 में गंगा नदी में बाढ़ आई और पुण्य भूमि गुरुकुल बहकर नष्ट हो गया। कॉलेज का भवन जीर्ण अवस्था में अभी भी विद्यमान् है जिसकी रक्षा होनी चाहिए। उस बाढ़ में धन तथा मकानों की हानि हुई जो उस समय कच्चे थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने निश्चय किया कि गुरुकुल को स्थानान्तरित किया जाये। अत: हरिद्वार के पास जमीन खरीद कर वर्तमान गुरुकुल स्थापित किया गया। अत: गुरुकुल के वर्तमान भवनों का निर्माण सन् 1930 में हुआ होगा 1920 में नहीं।

इन पंक्तियों को लिखने का तात्पर्य पाठकों को वास्तविकता से परिचित कराना है, आलोचना करना नही। - ***विनय भूषण गुप्ता, सी.-378, सरस्वती विहार, दिल्ली-34***

सम्पादकीय विचार

'पुण्य भूमि' लेख कोई ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर नहीं अपितु हृदय के उद्‌गारों पर आधारित लेख था। लेखक की दृष्टि में केवल पुण्य भूमि ही पुण्य भूमि नहीं बल्कि सारा विश्वविद्यालय परिसर जहां-जहां उस तपस्वी स्वामी श्रद्धानन्द जी का पदार्पण हुआ, पुण्यभूमि के रूप में प्रदिप्त हुआ है। ऐतिहासिकता की दृष्टि से तथ्यों में हुई भूल के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। इस हेतु लेखक श्री हर्षप्रिय आर्य जी को भी सूचित कर दिया गया है। - सम्पादक

दीक्षान्त समारोह में नव स्नातकों को स्वामी श्रद्धानन्द का सन्देश

- डॉ. उमा शशि दुर्गा

भारत की पवित्र भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से संसार का पथ आलोकित किया। महापुरुषों की इस परम्परा में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पंजाब के जिला जालन्धर में सन् 1856 को जन्मे बालक मुंशीराम को स्वामी श्रद्धानन्द बनाने का पूरा श्रेय महर्षि दयानन्द को दिया जाता है क्योंकि महर्षि दयानन्द से सम्पर्क के पहले मुंशीराम का व्यक्तिगत जीवन सामाजिक प्रभावों के कारण अनेक दुर्गुणों और दुव्यसनों से भरपूर था, किन्तु सन् 1882 ई. में बरेली आगमन पर महर्षि दयानन्द से भेंट होने के उपरान्त प्रथम दर्शन से ही उनकी जीवन-दिशा बदल गई और वे महर्षि दयानन्द के आदर्शों के प्रति समर्पित हो गए। जीवन भर ऋषि के सिद्धान्तों ने उन्हें बल दिया और वे निरन्तर कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर होने लगे।

12 अप्रैल, 1917 को मुंशीराम जी ने सन्यास ग्रहण किया। संन्यास दीक्षा लेते हुए वे कहते हैं-''श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के इस जीवन को मैंने पूरा किया है। श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है, अब भी श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर ही सन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ। इसलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी रखकर मैं अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखता हूँ जिससे मैं अगला सब जीवन भी श्रद्धामय बनाने में सफल हो सकूँ।''

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने अनेक क्षेत्रों में कार्य किया। उनका हर कार्य प्रेरणास्पद और क्रान्तिकारी रहा है। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के वे सूत्रधार रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना उनका क्रान्तिकारी कार्य कहा जा सकता है। उनके राष्ट्रभक्त नवयुवकों का निर्माण गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति ने किया। सन् 1913 को नव स्नातक को दिया गया

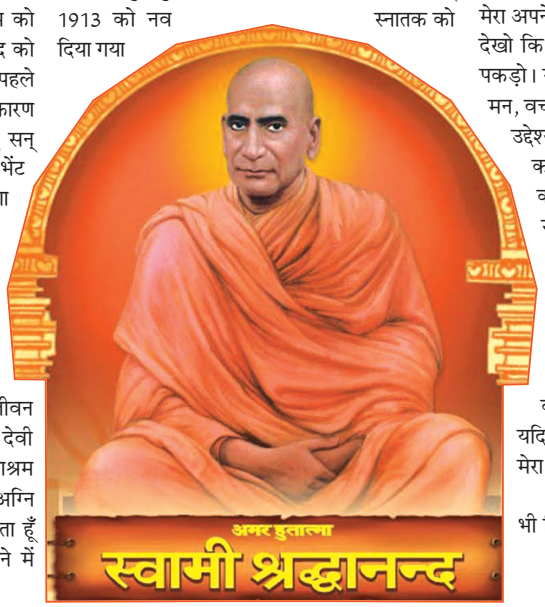

उनका उपदेश शिक्षा के मन्तव्य को स्पष्ट करता है- "पुत्रों! आज मुझे इतनी प्रसन्नता है कि तुम उसका अनुभव नहीं कर सकते। मुझे अपने जीवन में जिस बात के देखने की आशा नहीं थी, उसे मैंने देख लिया। यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तैयार हों, तो मैं बड़ी खुशी से उन्हें आज्ञा दे सकता हूँ, इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हूँ, तुममें से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम दिमागों को परतंत्र बनाना चाहते हैं, परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है जहाँ स्वतन्त्रता नहीं रुक सकती तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियों को केवल एक ही उपदेश है; मत देखो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं, सत्य की दृढ़ता को पकड़ो। सारे संसार का सत्य ही आधार है। यदि तुम्हारा मन, वचन और कर्म सत्यमय है, तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। प्रसिद्धि के पीछे भागकर कोई काम मत करो। प्रसिद्धि के पीछे भागने से किसी की प्रसिद्धि नहीं हुई। अपने सामने एक उद्देश्य रख लो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है' उपदेशक बनो या मत बनो, पर एक बात याद रखो, बनावटी मत बनो। सबको परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नही देता। वाणी न हो, न सही किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस संसार को नाट्यशाला बनाओ। स्वच्छ जीवन रक्खो। यदि इस प्रकार का स्नातकों का आचरण होगा तो मेरा पूरा संतोष है।"

स्वामी श्रद्धानन्द का यह दीक्षान्त भाषण आज भी विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक है।

- 47, साक्षर अपार्टमैंट, यूनिवर्सिटी टीचर सोसायटी, ए-4 पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110064
Email : drusd5@gmail.com

स्वामी श्रद्धानन्द जी को समर्पित

ओ! कल्याण मार्ग के पंथी

दयानन्द के दिव्य स्वप्न को धरती पर उतारने वाले।
श्रद्धासिक्त हृदय से उन पर ओ सर्वस्व वारने वाले।।

ओ कल्याण मार्ग के पंथी, ओ कंटक बुहारने वाले।
प्रथम स्वयं का प्रक्षालन कर पीछे जगत सुधाने वाले।।

श्रद्धा स्वयं सृजन की माता 'नाम' तुम्हारे ने बतलाया।
श्रद्धावान न क्या कर पाता काम तुम्हारे ने बतलाया।।

तुमने क्या क्या कर दिखलाया मैं कैसे गाकर बताऊं।
कर्म, वचन से अधिक बोलता, रवि को क्या दीपक दिखाऊं।।

ज्ञानदान की प्रबल पिपासा की, गुरुकुल दे रहा गवाही।
ओ ऋषिवर के वीर सिपाही, बलिदानी पथ के राही।।

कितना दर्द तुम्हारे दिल में था, इस दुखी देश की खातिर।
बता गए अपने जीवन से, तुम प्राणों की आहुति देकर।।

आर्य जाति, जागे, चेते, कुछ करे, स्वयं अपने को जाने।
रक्तबीत बो गए क्रान्ति के त्याग तपस्या के दीवाने।।

निज जीवन का कल्मष धोकर अगत को दे गए उजाला।
सबको धोना ध्येय बनाया, इतना अपने को धो डाला।

तुम जाते-जाते बोले थे - इस धरती पर फिर आऊंगा।
'शुद्धिमंत्र' के गंगाजल से, मनुज मात्र को नहलाऊंगा।।

वचन तुम्हारे वे ही अब तक अन्तरिक्ष में गूंज रहे हैं।
कब आओगे-कब आओगे, प्रतिध्वनियों में पूछ रहे हैं।

देखें, इन प्रश्नो का उत्तर कौन बनकर आ रहा फिर से।
श्रद्धासुमन लिए जनजीवन, स्वागत गान गा रहा फिर से।।

- लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'
भोजपुरा, मैनपुरी - 205001 (उ.प्र.)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

मैंगलौर पुस्तक मेला

स्थान : फुटबॉल मैदान, मंगलौर (कर्नाटक)

4 जनवरी से 12 जनवरी, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें

-: निवेदक :-

विनय आर्य, महामन्त्री सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक

।। ओ३म्।।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

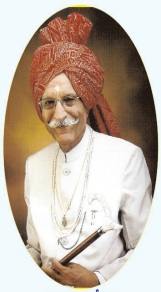

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें
गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

गुरुकुल चाय, पायोकिल, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

सामयिक चर्चा

सदाचार बनाम समलैंगिकता

- डॉ. विवेक आर्य

समलैंगिता का घोर विरोध करता है आर्यसमाज

सुप्रीम कोर्ट द्वारा समलैगिंकता को धारा ३७७ के अन्तर्गत अपराध करार दिया गया हैं। अपने आपको सामाजिक कार्यकर्त्ता कहने वाले, आधुनिकता का दामन थामने वाले एक विशेष बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को हताशापूर्ण बताया जा रहा है। उनका कहना हैं कि अंग्रेजों द्वारा १८६१ में बनाया गया कानून आज अप्रासंगिक हैं। कोई इस फैसले को इतिहास का काला दिन बता रहा हैं, कोई इसे सामाजिक अधिकारों में भेदभाव और मौलिक अधिकारों का हनन बता रहा हैं, कोई इसे पाषाण काल की बात कह रहा है। समलैंगिकता का समर्थन करने वाले पक्ष का कहना हैं कि इससे HIV की रोकथाम करने में रुकावट होगी क्योंकि समलैंगिक समाज के लोग रोक लगने पर खुलकर सामने नहीं आएंगे और दूसरे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को पुलिस इस समाज में HIV प्रचार करने से रोकती है।

सबसे अचरज की बात यह है कि वही समुदाय कोर्ट के फैसले का सबसे अधिक विरोध कर रहा है जिसने पिछले वर्ष दिसंबर महीने में घटे दामिनी बलात्कार कांड के विरुद्ध कड़े से कड़े कदम उठाने की मांग की थी। गौरतलब है कि तब सारा ठीकरा पुलिस की नाकामयाबी पर थोप दिया गया था।

इस फैसले का अधिकतर धार्मिक संगठनों ने स्वागत किया हैं। उनका कहना है कि यह करोड़ों भारतियों का जो नैतिकता में विश्वास रखते हैं उनकी भावनाओं का आदर है। आईये समलैंगिकता को प्रोत्साहन देना क्यों गलत है इस विषय पर तार्किक विवेचना करें।

हमें इस तथ्य पर विचार करने कि आवश्यकता है कि अप्राकृतिक स्वछंद सम्बन्ध समाज के लिए क्यों अहितकारक है। अपने आपको आधुनिक बनाने कि होड़ में स्वछंद सम्बन्ध की पैरवी भी आधुनिकता का परिचायक बन गया है। सत्य यह है कि इसका समर्थन करने वाले इसके दूरगामी परिणामों की अनदेखी कर देते हैं। प्रकृति ने मानव को केवल और केवल स्त्री-पुरुष के मध्य सम्बन्ध बनाने के लिए बनाया है। इससे अलग किसी भी प्रकार का सम्बन्ध अप्राकृतिक एवं निरर्थक है चाहे वह पुरुष-पुरुष के मध्य हो, स्त्री-स्त्री के मध्य हो वह विकृत मानसिकता को जन्म देता है। उस विकृत मानसिकता की कोई सीमा नहीं है। उसके परिणाम आगे चलकर बलात्कार (Rape), सरेआम नग्न होना (Exhibitionism), पशु सम्भोग (Bestiality), छोटे बच्चों और बच्चियों से दुष्कर्म (Pedophilia), हत्या कर लाश से दुष्कर्म (Necrophilia), मार-पीट करने के बाद दुष्कर्म (Sadomasochism), मनुष्य के शौच से प्रेम (Coprophilia) और न जाने किस किस रूप में निकलता है। अप्राकृतिक सम्बन्ध से संतान न उत्पन्न हो सकना क्या दर्शाता है? सत्य यह है कि प्रकृति ने पुरुष और नारी के मध्य सम्बन्ध का नियम केवल और केवल संतान की उत्पत्ति के लिए बनाया था। आज मनुष्य ने अपने आपको उन नियमों से ऊपर समझने लगा है और जिसे वह स्वछंदता समझ रहा है वह दरअसल अज्ञानता है। भोगवाद मनुष्य के मस्तिष्क पर ताला लगाने के समान है। भोगी व्यक्ति कभी भी सदाचारी नहीं हो सकता, वह तो केवल और केवल स्वार्थी होता है। इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य को सामाजिक हितकारक नियम पालन का करने के लिए बाध्य होना चाहिए। जैसे आप अगर सड़क पर गाड़ी चलाते हैं तब आप उसे अपनी इच्छा से नहीं अपितु ट्रैफिक के नियमों को ध्यान में रखकर चलाते हैं। वहाँ पर क्यों स्वछंदता के मौलिक अधिकार का प्रयोग नहीं करते? अगर करेंगे तो दुर्घटना हो जायेगी। जब सड़क पर चलने में स्वेच्छा की स्वतंत्रता नहीं है, तब स्त्री-पुरुष के मध्य संतान उत्पत्ति करने के लिए विवाह व्यवस्था जैसी उच्च सोच को नकारने में कैसी बुद्धिमत्ता है।

कुछ लोगों द्वारा समलैंगिकता के समर्थन में खजुराओ की नग्न मूर्तियाँ अथवा वात्सायन का कामसूत्र को भारतीय संस्कृति और परम्परा का नाम दिया जा रहा है जबकि सत्य यह है कि भारतीय संस्कृति का मूल सन्देश वेदों में वर्णित संयम विज्ञान पर आधारित शुद्ध आस्तिक विचारधारा है।

भौतिकवाद अर्थ और काम पर ज्यादा बल देता है जबकि अध्यात्म धर्म और मुक्ति पर ज्यादा बल देता है। वैदिक जीवन में दोनों का समन्वय है। एक ओर वेदों में पवित्र धनार्जन करने का उपदेश हैं दूसरी ओर उसे श्रेष्ठ कार्यों में दान देने का उपदेश है। एक ओर वेद में भोग केवल और केवल संतान उत्पत्ति के लिए है दूसरी तरफ संयम से जीवन को पवित्र बनाये रखने की कामना है। एक ओर वेद में बुद्धि की शांति के लिए, धर्म की और दूसरी ओर आत्मा की शांति के लिए मोक्ष (मुक्ति) की कामना है। धर्म का मूल सदाचार है। अत: कहा गया है आचार परमो धर्म: अर्थात सदाचार परम धर्म है। आचारहीन न पुनन्ति वेदा: अर्थात दुराचारी व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। अत: वेदों में सदाचार, पाप से बचने, चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य आदि पर बहुत बल दिया गया है जैसे-

यजुर्वेद ४/२८ : हे ज्ञान स्वरुप प्रभु मुझे दुश्चरित्र या पाप के आचरण से सर्वथा दूर करो तथा मुझे पूर्ण सदाचार में स्थिर करो।

ऋग्वेद ८/४८/५-६ : वे मुझे चरित्र से भ्रष्ट न होने दे।

यजुर्वेद ३/४५ : ग्राम, वन, सभा और वैयक्तिक इन्द्रिय व्यवहार में हमने जो पाप किया हं उसको हम अपने से अब सर्वथा दूर कर देते हैं।

यजुर्वेद २/१५-१६ : दिन, रात्रि, जागृत और स्वप्न में हमारे अपराध और दुष्ट व्यसन से हमारे अध्यापक, आप्त विद्वान,धार्मिक उपदेशक और परमात्मा हमें बचाएं।

ऋग्वेद १०/५/६ : ऋषियों ने सात मर्यादाएं बनाई हैं उनमे से जो एक को भी प्राप्त होता है, वह पापी है. चोरी, व्यभिचार, श्रेष्ठ जनों की हत्या, भ्रूण हत्या, सुरापान,

- शेष पृष्ठ 6 पर

Homosexuality a Crime : Save Mankind from AIDS

A. HIV prevalence in India is 0.2%. Among gays, it is more than 7%. Assuming everyone in India turns gay, given encouragement by law and then we will have more HIV patients than diabetics. And I need not tell that AIDS is most dangerous disease known to human kind. I am talking about Government records. Refer http://www.bbc.co.uk/news/world-asia-india-17363200

B. MSM (Male sex with male) increases chance of HIV spread several times. Refer CMDT and Harrison text on Medicines.

C. Monogamy is non-existent in homosexuals. As per whatever studies we know, most homosexuals change partners more frequently than many people change shoes. So they spread HIV like anything.

D. Almost 50% of homosexuals are actually bisexuals. Thus they become more dangerous HIV carriers.

E. The Article 377 does not victimize homosexuals. It simply says that any unnatural carnal act with any man, woman or animal is punishable. I agree the law should be changed. It should be reworded to mean " Any carnal act with any man, woman or animal that increases risk of spread of HIV is punishable."

F. I don't care what 2 people do in privy of their rooms. I don't care if certain people have preference for penetration in a part of body that was designed to expel shit, and is so dirty that people wash hands with soap after excretion. While I can prove that it is indeed stupidity, but in a world where a huge variety of stupidities are encouraged in name of 'freedom', one can argue that an exception should not be made for this as well. So I have no issues with personal lives and acts of people.

But I have concerns if certain people breed the most dangerous disease known to humanity. And unfortunately such acts of unnatural sex are greatest breeders of AIDS.

In Delhi, if I keep water stored in cooler for long and that breeds mosquitoes, I am fined because of threat of dengue. If I make bombs and guns and explode in my own home, I will be arrested. If I kill my friend after his written consent, I will still be charged with murder. In same vein, until a vaccination for AIDS is discovered, there should be heavy fine for anyone who breeds AIDS directly or indirectly.

Just as we all unite to fight against dengue or terrorism; just as we allow punishments if someone builds guns and firearms without permission, in same vein, we should unite to fight against spread of AIDS.

I cannot but admire the ancient law-keepers who made such a fantastic law with such foresight to prevent AIDS. And the moment we got into having sex with monkeys and same gender, look at the mess we have brought in.

Let's unite to fight against AIDS. **- Sanjeev Newar**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

6-7वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन

19 जनवरी, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) **2 फरवरी, 2014 : आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, दिल्ली**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के छठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार, 19 जनवरी 2014 को प्रात: 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में सातवां आयोजन 2 फरवरी, 2014 को होगा। अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1**' के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जनवरी, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 15 जनवरी, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। - **अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)**

पृष्ठ 5 का शेष

दुष्ट कर्म को बार बार करना और पाप करने के बाद छिपाने के लिए झूठ बोलना।

अथर्ववेद ६/४५/१ : हे मेरे मन के पाप! मुझसे बुरी बातें क्यों करते हो? दूर हटो, मैं तुझे नहीं चाहता।

अथर्ववेद ११/५/१० : ब्रह्मचर्य और तप से राजा राष्ट्र की विशेष रक्षा कर सकता है।

अथर्ववेद ११/५/१९ : देवताओं (श्रेष्ठ पुरुषों) ने ब्रहमचर्य और तप से मृत्यु (दु:ख) का नष्ट कर दिया है।

ऋग्वेद ७/२१/५ : दुराचारी व्यक्ति कभी भी प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता।

इस प्रकार अनेक वेद मन्त्रों में संयम और सदाचार का उपदेश है।

खजुराओ आदि की व्यभिचार को प्रदर्शित करने वाली मूर्तियाँ, वात्सायन आदि के अश्लील ग्रन्थ एक समय में भारत वर्ष में प्रचलित हुए वाममार्ग का परिणाम हैं जिसके अनुसार मांसाहार, मदिरा एवं व्यभिचार से ईश्वर प्राप्ति है। कालांतर में वेदों का फिर से प्रचार होने से यह मत समाप्त हो गया पर अभी भी भोगवाद के रूप में हमारे सामने आता रहता है।

मनु स्मृति में समलैंगिकता के लिए दंड एवं प्रायश्चित का विधान होना स्पष्ट रूप से यही दिखाता हैं कि हमारे प्राचीन समाज में समलैंगिकता किसी भी रूप में मान्य नहीं थी। कुछ कुतर्की यह भी कह रहे हैं कि मनु स्मृति में अत्यंत थोड़ा सा दंड हैं उनके लिए मेरी सलाह हैं कि उसी मनुस्मृति में ब्रह्मचर्य व्रत का नाश करने वाले के लिए मनु स्मृति में दंड का क्या विधान हैं, जरा देख लें।

इसके अतिरिक्त बाइबिल, कुरान दोनों में इस सम्बन्ध को अनैतिक, अवाँछनीय, अवमूल्यन का प्रतीक बताया गया है।

जो लोग यह कुतर्क देते हैं कि समलैंगिकता पर रोक से AIDS की रोकथाम होती है उनके लिए विशेष रूप से यह कहना चाहूँगा कि समाज में जितना सदाचार बढ़ेगा उतना समाज में अनैतिक सम्बन्धों पर रोकथाम होगी। आप लोगों का तर्क कुछ ऐसा है कि आग लगने पर पानी की व्यवस्था करने में रोक लगने के कारण दिक्कत होगी, हम कह रहे हैं कि आग को लगने ही क्यों देते हो? भोग रूपी आग लगेगी तो नुकसान तो होगा ही होगा। कहीं पर बलात्कार होंगे, कहीं पर पशुओं के समान व्यभिचार होगा , कहीं पर बच्चों को भी नहीं बख्शा जायेगा। इसलिए सदाचारी बनो न कि व्यभिचारी।

एक कुतर्क यह भी दिया जा रहा है कि समलैंगिक समुदाय अल्पसंख्यक है, उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें अपनी बात रखने का मौका मिलना चाहिए। मेरा इस कुतर्क को देने वाले सज्जन से प्रश्न हैं कि भारत भूमि में तो अब अखंड ब्रह्मचारी भी अल्पसंख्यक हो चले हैं। उनकी भावनाओं का सम्मान रखने के लिए मीडिया द्वारा जो अश्लीलता फैलाई जा रही हैं उन पर लगाम लगाना भी तो अल्पसंख्यक के हितों की रक्षा के समान है।

एक अन्य कुतर्की ने कहा कि पशुओं में भी समलैंगिकता देखने को मिलती है। मेरा उस बंधु से एक ही प्रश्न है कि अनेक पशु बिना हाथों के केवल जिह्वा से खाते हैं, आप उनका अनुसरण क्यों नहीं करते? अनेक पशु केवल धरती पर रेंग कर चलते हैं आप उनका अनुसरण क्यों नहीं करते? चकवा-चकवी नामक पक्षी अपने साथी की मृत्यु होने पर होने प्राण त्याग देता है, आप उसका अनुसरण क्यों नहीं करते?

ऐसे अनेक कुतर्क हमारे समक्ष आ रहे हैं जो केवल भ्रामक सोच का परिणाम हैं। जो लोग भारतीय संस्कृति और प्राचीन परम्पराओं को दकियानूसी और पुराने जमाने की बात कहते हैं वे वैदिक विवाह व्यवस्था के आदर्शों और मूलभूत सिद्धांतों से अनभिज्ञ हैं। चारों वेदों में वर-वधू को महान वचनों द्वारा व्यभिचार से परे पवित्र सम्बन्ध स्थापित करने का आदेश है। ऋग्वेद के मंत्र के स्वामी दयानंदकृत भाष्य में वर-वधू से कहता हैं। हे स्त्री! मैं सौभाग्य अर्थात् गृहस्थाश्रम में सुख के लिए तेरा हस्त ग्रहण करता हूँ और इस बात की प्रतिज्ञा करता है कि जो काम तुझको अप्रिय होगा उसको मैं कभी न करूँगा। ऐसे ही स्त्री भी पुरुष से कहती हैं की जो कार्य आपको अप्रिय होगा वह मैं कभी न करूँगी और हम दोनों व्यभिचारआदि दोषरहित होके वृद्धावस्था पर्यन्त परस्पर आनंद के व्यवहार करेंगे। परमेश्वर और विद्वानों ने मुझको तेरे लिए और तुझको मेरे लिए दिया है , हम दोनों परस्पर प्रीति करेंगे तथा उद्योगी होकर घर का काम अच्छी तरह और मिथ्याभाषण से बचकर सदा धर्म में ही बर्तेंगे। सब जगत का उपकार करने के लिए सत्यविद्या का प्रचार करेंगे और धर्म से संतान को उत्पन्न करके उनको सुशिक्षित करेंगे। हम दूसरे स्त्री और दूसरे पुरुष से मन से भी व्यभिचार न करेंगे। एक और गृहस्थ आश्रम में इतने उच्च आचार और विचार का पालन करने का मर्यादित उपदेश हैं, दूसरी ओर पशु के समान स्वछन्द अमर्यादित सोच है। पाठक स्वयं विचार करें कि मनुष्य जाति की उन्नति उत्तम गृहस्थी बनकर समाज को संस्कारवान संतान देने में है अथवा पशुओं के समान कभी इधर कभी उधर मुँह मारने में है।

समलैंगिकता एक विकृत सोच हैं , मनोरोग है, बीमारी है। इसका समाधान इसका विधिवत उपचार है न कि इसे प्रोत्साहन देकर सामाजिक व्यवस्था को भंग करना है। इसका समर्थन करने वाले स्वयं अँधेरे में हैं औरो को भला क्या प्रकाश दिखायेंगे। कभी समलैंगिकता का समर्थन करने वालो ने भला यह सोचा है कि अगर सभी समलैंगिक बन जायेंगे तो अगली पीढ़ी कहाँ से आयेगी?

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आवश्यकता है

आर्यसमाज के धार्मिक कार्यक्रमों को टी.वी. पर प्रसारित करने हेतु **प्रबन्धक** की आवश्यकता है।

इसी के साथ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए **उपदेशक, प्रचारक एवं भजनोपदेशकों** की भी आवश्यकता है। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
Email:aryasabha@yahoo.com

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लगन एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

नि:शुल्क रिकार्डिंग कराएं

आर्य समाज के भजनोपदेशकों एवं उपदेशकों के लिए शुभ सूचना

आर्यसमाज के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक जो अपने भजनों-उपदेशों की ऑडियो-वीडियो रिकार्डिंग कराने के इच्छुक हों सम्पर्क करें-**डॉ. विजय दीक्षित,**
वी.एम.टी. स्टूडियो
730, से. 6, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली-22
मो. 9213499532, 9868787522

वधू चाहिए

आर्य युवक रवि शास्त्री, गौत्र कश्यप, आयु 30 वर्ष, वजन 67 किलो, 5फुट 10 इंच, एम.ए., बी.एड, पी.एच.डी. मासिक आय 65000/- रुपये पिता का अपना व्यवसाय, के लिए सुयोग्य, सुन्दर, सुशील आर्य कन्या चाहिए, इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें-

श्री राममूरत आर्य (पिता)
आर्य वस्त्रालय, रेलवे क्रॉसिंग, धौरुआ रोड, मालीपुर, अम्बेडकर नगर (उ.प्र.) मो. 07666666991, 08127978254

विश्व का सर्वोत्तम अभिवादन 'नमस्ते'

आज जिस प्रकार हम देखते हैं कि समग्र विश्व अनेक भागों में, अनेक विचारों में तथा अनेक सस्कारो में बंटा हुआ है। प्राचीन काल में ऐसा नहीं था। पूरे के पूरे अर्थात समग्र विश्व की एक ही संस्कृति थी, एक ही विचार था, एक ही सोच थी, एक ही धर्म था तथा एक ही पंथ था। इस सब के साथ ही साथ समग्र विश्व में एक ही विचारधारा थी तथा एक ही अभिवादन था। इस अभिवादन को नमस्ते के द्वारा किया जाता था। प्रत्येक व्यक्ति स्त्री हो या पुरुष, बालक हो या वृद्ध, पति हो या पत्नी, साधु हो या गृहस्थ, सब लोग जहाँ भी मिलते थे, एक ही अभिवादन करते थे और इस अभिवादन को हम नमस्ते के नाम से जानते हैं।

हमारे इस अभिवादन में कहीं कोई इतिहास नहीं आता क्योंकि वेद में भी अभिवादन के लिए नमस्ते का ही उल्लेख मिलता है। प्राचीन इतिहास साक्षी है कि जब भी और जहाँ भी कहीं अभिवादन की आवश्यकता पड़ी , सदैव नमस्ते शब्द का ही उल्लेख हुआ। नमस्ते में बड़े छोटे का भेद न था। – ***डॉ. अशोक आर्य***

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली का

80वां वार्षिकोत्सव एवं 34वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह : 22 दिसम्बर, 2013

प्रात: 8 :00 बजे से दोपहर 1:30 बजे

आशीर्वाद : डॉ. रघुवीर वेदालंकार अध्यक्षता : डॉ. अशोक कुमार चौहान

भजन : पं. ओमप्रकाश वर्मा एवं पं. सत्यपाल पथिक

मुख्य वक्ता : प्रो. शशि प्रभा कुमार, सत्यानन्द आर्य, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. महावीर अग्रवाल, डॉ. धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री, डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय, स्वामी धर्मेश्वरानन्द , स्वामी सम्पूर्णानन्द आदि।

निवेदक : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (आचार्य) ***कैप्टन रुद्रसेन, मन्त्री***

आर्यसमाज मंडी डबवाली का वेद प्रचार उत्सव सम्पन्न

गत दिनों आर्यसमाज मंडी डबवाली (हरियाणा) का वार्षिक वेद प्रचार उत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल सजुमा कैथल की आचार्या लक्ष्मी भारती के प्रवचन तथा पं. सत्यपाल पथिक के भजन हुए। –***डॉ. अशोक आर्य***

आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-1, दिल्ली का 41वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज अशांक विहार फेस-1, एफ ब्लाक, दिल्ली-52 का 41वां वार्षिकोत्सव दिनांक 27 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2013 तक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ. जयेन्द्र कुमार जी द्वारा गीता कथा एवं महाशय सहदेव बेधड़क के सुमधुर भजन हुए। 29 नवम्बर को वैदिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन श्री विजय भूषण आर्य एवं डॉ. सुषमा आर्या जी के संयोजन में किया गया, जिसमें विभिन्न विद्यालयों क छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। समापन समारोह पर विजेता बच्चों को पुरस्कार वितरण किया गया।

-जीवन लाल आर्य, मन्त्री

Say No to Rape : वेद में व्यभिचार के लिए दण्ड

उत्सक्थ्याऽअव गुदं धेहि समञ्जिं चारया वृषन्।
य स्त्रीणां जीवभोजन:।(यजु023/21)

हे शक्तिमान राजन् (वृषन्)जो पापी लोग स्त्रियों के साथ व्यभिचार एवं बलात्कार करके उनका जीवन नष्ट करने वाले हैं उन्हें पैर ऊपर और सिर नीचे करके उल्टा लटकाकर ताड़न करना चाहिये और इस प्रकार अपने राष्ट्र में न्याय का संचार करना चाहिये।

Its utmost duty of the King or Ruler to punish those Sinners (Rapists) who destroys the life of a women by Illicit conduct or Rape by hanging them upside down and by beating them so that Morality, Peace and Justice prevail in his kingdom – Yajur Veda 23:21

(Dedicated to Nirbhaya and all sisters to promote Morality)

आर्यसमाज रोहिणी सै-7 एवं वेद प्रचार मंडल उ.प. दिल्ली द्वारा

उपनयन संस्कार एवं युवा विचार गोष्ठी

29 दिसम्बर, 2013
सायं 3:30 बजे से 7:00 बजे
यज्ञब्रह्मा : डॉ. विनय वेदालंकार
भजन : श्री श्यामवीर राघव
–: **गोष्ठी विषय** :–
सुखी जीवन का आधार सोलह संस्कार
मुख्य वक्ता : डॉ. विनय वेदालंकार

– राजीव आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज जामनगर (गुजरात)

वेद कथा एवं वार्षिकोत्सव

20 दिसम्बर से 23 दिसम्बर, 2013
वेद कथा : आचार्य विद्यादेव
भजन : पं. सन्तोष सुमन
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
23 दिसम्बर, 2013
अध्यक्षता : आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

– डॉ. अविनाश भट्ट, मन्त्री

आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी

77वां वार्षिकोत्सव

19 दिसम्बर से 22 दिसम्बर, 2013
समापन समारोह : 22 दिसम्बर
वैदिक परिचर्चा : दोपहर 2 बजे
विषय : राष्ट्र धर्म, राजनीति व वेद
अध्यक्षता : डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
मुख्य वक्ता : पं. योगेन्द्र यौगिक, स्वामी राजेन्द्र योगी, पं. श्यामवीर राघव।

– सन्तोष कुमार आर्य, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्यवीर दल राजस्थान का

योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर

24 से 31 दिसम्बर, 2013
आयोजक : आर्यसमाज शास्त्री चौक, बालोतरा, बाड़मेर (राजस्थान)
शिविर शुल्क : 400/- रुपये

– भवेदश शास्त्री, प्रान्तीय मन्त्री
फोन : 0141-2621879

ज्ञानवर्धक गीतों की रचना करके पुरस्कार जीतें

सभी गीतकारों, भजनोपदेशकों से निवेदन है कि वर्तमान में नए-नए तरीके से फिल्मी गाने बनाए जा रहे हैं, जिससे समाज में गलत संदेश जा रहा है। युवा पीढ़ी इन गानों को सुनकर जल्दी याद कर लेती है।

अत: समाज के कल्याणार्थ सभी भजनोपदेशकों एवं गीतकारों से प्रार्थना है कि नित नए-नए फिल्मी धुनों के गानों पर अपनी तरफ ज्ञानवर्धक तरीके से गीतों की रचना करें जिससे समाज की भलाई हो सके। इस कार्य के लिए जो गीत पसन्द होगा उन्हें 2000/- रुपये प्रति गीत/भजन पारितोषिक दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

– विजय दीक्षित, वी.एम.टी. स्टूडियो
मो. 9213499532, 9868787522

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का
वैदिक प्रकाशन विभाग
प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

अनु.	साहित्य	मूल्य
1.	सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/-
2.	महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/-
3.	शेख चिल्ली और लाल बुजक्कड (सीडी)	30/-
4.	पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करें (सीडी)	30/-
5.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/-
6.	सत्य की राह (सीडी)	30/-
7.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (5 सी.डी. सैट)	100 /-
8.	वैदिक विनय	150/-
9.	गुरुदत्त विद्यार्थी – हिन्दी / अंग्रेजी	80/-
10.	दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/-
11.	उपनिषदों की कहानियाँ	60/-
12.	शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400 /- सैंकड़ा
13.	शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300 /- सैंकड़ा
13.	नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार कुशलता	200/-
14.	नेम स्लिप (1×21)	10/-
15.	समस्त कॉमिक्स	25 से 35/-
16.	अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि	50/-
17.	वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/-
18.	दयानन्द ग्रन्थ परिचय	30/-
19.	सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/-
	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/-
	सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/-

सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य पर 20 % छूट।
अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर 10% की छूट।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 16 दिसम्बर, 2013 से रविवार 22 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19/20 दिसम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 दिसम्बर, 2013

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग में
नए भवन का निर्माण कार्य जोरों पर

प्रतिष्ठा में,

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी-किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/- रुपये प्रति शीट।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

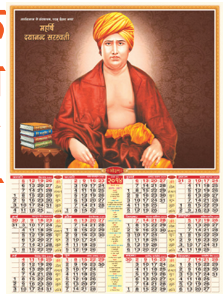

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर